लखनवी अंदाज़ (यशपाल)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ 'लखनवी अंदाज़' कथाकार यशपाल की व्यंग्य-रचना है। इस व्यंग्य-लेखन में उनका उद्देश्य केवल इतना समझाना था कि कहानी-रचना के लिए कथ्य होना अत्यंत आवश्यक है। बिना कथ्य के कहानी नहीं लिखी जा सकती। वे यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि भले ही बिना कथ्य के कहानी न लिखी जा सके, लेकिन फिर भी बहुत कुछ ऐसा लिखा जा सकता है, जिसे पढ़ा जा सके। इस व्यंग्य-रचना में यशपाल ने पतनोन्मुख सामंती-पूँजीपति वर्ग पर कटाक्ष करते हुए उन ढोंगी लेखकों पर भी कटाक्ष किया है, जो बिना कथ्य के कहानी लिखने का दंभ भरते हैं। जो वास्तविकता से बेपरवाह एक बनावटी जीवन जीने का आदी है। उनकी यह रचना व्यंग्य भले ही है, किंतु आधुनिक जीवन के करीब भी है। आज भी समाज में ऐसे लोगों का एक बड़ा वर्ग है, जो इस बनावटी परजीवी संस्कृति को जीने में ही अपनी आन-बान-शान समझता है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **लेखक** – प्रकृति-प्रेमी • मिलनसार • आत्माभिमानी • कल्पनाशील • व्यंग्यकार • नई कहानी को यथार्थ से परे मानने वाले।
2. **नवाब साहब** – एकांतप्रिय • बड़प्पन का आडंबर करने वाले • सुसभ्य • औपचारिक • नवाबी दिखाने के लिए भूखा रहने को तत्पर • कल्पनालोक में जीने वाले अयथार्थवादी।

पाठ का सारांश

'लखनवी अंदाज़' यशपाल जी की एक व्यंग्य-रचना है, जिसका सारांश इस प्रकार है–

ट्रेन में नवाब साहब से भेंट– नगर के किसी स्थान से पैसेंजर ट्रेन चल पड़ने के लिए तैयार थी। सेकंड क्लास का टिकट अधिक दाम का है, फिर भी एकांत मिलने के लिहाज़ से सेकंड क्लास का ही टिकट ले लिया। दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े। एक बर्थ पर लखनऊ के नवाबी अंदाज़ में एक सज्जन पालथी मारकर बैठे थे। उनके सामने दो खीरे तौलिये पर रखे थे। नवाब साहब ने मेल-जोल बढ़ाने में कोई उत्साह न दिखाया।

लेखक का नवाब साहब की नवाबी का अनुमान लगाना– ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे।... अकेले सफ़र का वक़्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे।

नवाब साहब का लेखक से औपचारिकता निभाना और खीरे काटना–'ओह', नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया, 'आदाब-अर्ज़, जनाब, खीरे का शौक फ़रमाएँगे?' लेखक ने उनका धन्यवाद किया।

नवाब साहब ने खीरे काटे, उनपर नमक, जीरा लगाया। नवाब साहब ने फिर खीरे लेने के लिए पूछा। लेखक ने पुनः धन्यवाद दिया और कहा कि मेरी पाचन-शक्ति भी कमज़ोर है।

झूठी नवाबी में नवाब साहब का खीरे सूँघकर बाहर फेंकना– नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। खिड़की के बाहर देखकर गहरा साँस लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें बंद हो गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए।

बिना कथ्य की 'नई कहानी' पर लेखक का व्यंग्य– नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिये से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से लेखक की ओर देखा, मानो कह रहे हों–यह है खानदानी रईसों का तरीका। नवाब साहब की ओर से भरे पेट की ऊँची डकार का शब्द सुनाई दिया। लेखक के ज्ञान-चक्षु खुल गए। खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से पेट भर जाने पर डकार आ सकती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के लेखक की इच्छा करने से ही 'नई कहानी' का जन्म क्यों नहीं हो सकता।

शब्दार्थ

मुफस्सिल = केंद्रस्थ नगर के आस-पास के स्थान। **सेकंड क्लास** = द्वितीय श्रेणी। **प्रतिकूल** = विपरीत। **निर्जन** = सुनसान, खाली, व्यक्तिरहित। **बर्थ** = शैया। **सफेदपोश** = भद्र व्यक्ति। **सहसा** = अचानक। **किफायत** = मितव्ययिता, समझदारी से उपयोग करना। **आदाब-अर्ज** = मुस्लिमों का अभिवादन का एक तरीका। **गुमान** = भ्रम। **शुक्रिया** = धन्यवाद। **एहतियात** = सावधानी। **करीने से** = व्यवस्थित रूप से, क्रम से। **बुरक देना** = छिड़क देना। **स्फुरण** = फड़कना, हिलना। **प्लावित** = पानी भर जाना। **पनियाती** = रसीली। **मेदा** = आमाशय। **तस्लीम** = सम्मान में। **तहजीब** = शिष्टता। **नफासत** = स्वच्छता। **नजाकत** = कोमलता। **नफीस** = बढ़िया। **एब्स्ट्रेक्ट** = सूक्ष्म, जिसका भौतिक अस्तित्व न हो, अमूर्त। **सकील** = आसानी से न पचनेवाला।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए*–

(1) गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर, ज़रा दौड़कर उसमें चढ़ गए। अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ताज़े-चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। सोचा, हो सकता है, यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हों या खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों। **(CBSE 2016)**

1. **लेखक गाड़ी के किस डिब्बे में चढ़ गया–**
   (क) प्रथम श्रेणी के (ख) द्वितीय श्रेणी के
   (ग) तृतीय श्रेणी के (घ) किसी में नहीं।
2. **डिब्बे के बारे में लेखक का अनुमान था कि–**
   (क) डिब्बा निर्जन होगा (ख) डिब्बा निर्जन नहीं होगा
   (ग) डिब्बा साफ़-स्वच्छ होगा (घ) डिब्बा गंदा होगा।
3. **बर्थ पर बैठे थे–**
   (क) लेखक
   (ख) नेताजी
   (ग) एक साधु
   (घ) नवाबी नस्ल के सफ़ेदपोश।
4. **नवाब साहब के सामने रखे थे–**
   (क) एक दर्जन केले (ख) दो सेब
   (ग) दो खीरे (घ) कुछ अमरूद।
5. **लेखक के अचानक डिब्बे में आ जाने पर सफ़ेदपोश सज्जन की क्या प्रतिक्रिया हुई–**
   (क) वह उठकर खड़ा हो गया
   (ख) उसने लेखक का स्वागत किया
   (ग) उसकी आँखों में एकांत विघ्न का असंतोष उभर आया
   (घ) उसने लेखक को अपने पास बैठाया।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(2) खाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे। ·····अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

हम कनखियों से नवाब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। 'ओह', नवाब साहब ने हमें संबोधित किया, 'आदाब-अर्ज़, जनाब, खीरे का शौक फ़रमाएँगे? नवाब साहब का सहसा भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया, आप शराफ़त का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया, 'शुक्रिया, किबला शौक फ़रमाएँ।' **(CBSE 2016)**

1. **लेखक की क्या आदत थी–**
   (क) कुछ खाते-पीते रहने की
   (ख) अपनी बढ़ाई करने की
   (ग) कुछ न कुछ सोचने की
   (घ) दूसरों की बुराइयाँ ढूँढने की।
2. **लेखक नवाब साहब की ओर कैसे देख रहे थे–**
   (क) सीधी नज़रों से (ख) क्रोधपूर्ण आँखों से
   (ग) कनखियों से (घ) बंद आँखों से।
3. **लेखक को नवाब साहब की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी–**
   (क) सहसा भाव परिवर्तन (ख) बिना बात हँसना
   (ग) पान चबाना (घ) खीरा खाना।

4. **लेखक क्या अनुमान करने लगा–**
   (क) नवाब साहब सेकंड क्लास डिब्बे में क्यों चढ़े होंगे?
   (ख) नवाब साहब को क्या संकोच और असुविधा हो रही है?
   (ग) नवाब साहब उसके प्रति सम्मान का व्यवहार क्यों नहीं कर रहे हैं?
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **नवाब साहब द्वारा खीरा खाने के लिए पूछे जाने पर लेखक ने क्या जवाब दिया–**
   (क) धन्यवाद, आप खीरा खाइए
   (ख) हाँ जी, मैं खीरा खाऊँगा
   (ग) धन्यवाद, मैं खीरा नहीं खाता
   (घ) जी आप पहले खाइए।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क)।

(3) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ निःश्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ-होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हों– यह है खानदानी रईसों का तरीका। ***(CBSE 2015, 16)***

1. **नवाब साहब ने तृष्णा भरी आँखों से देखा–**
   (क) लेखक को
   (ख) नमक-मिर्च से युक्त खीरे की फाँकों को
   (ग) रेल के डिब्बे को
   (घ) पके हुए फलों को।
2. **खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ निःश्वास लेना प्रतीक है–**
   (क) नवाब साहब की थकान का
   (ख) उनकी आत्म-संतुष्टि का
   (ग) लेखक के प्रति उनके क्रोध का
   (घ) लेखक की उपस्थिति में खीरा न खा सकने की विवशता का।
3. **खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंकने से पहले नवाब ने कौन-सी क्रिया नहीं की–**
   (क) फाँक उठाकर होंठों तक ले गए
   (ख) फाँक को सूँघा
   (ग) फाँक को थोड़ा-सा चखा
   (घ) मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से नीचे उतारा।
4. **नवाब साहब ने खीरे का रसास्वादन कैसे किया–**
   (क) देखकर (ख) खाकर
   (ग) सूँघकर (घ) वासना से।
5. **नवाब साहब ने खीरे की फाँकों को बाहर क्यों फेंक दिया–**
   (क) खीरा खाने योग्य नहीं था।
   (ख) नवाब को खीरा खाने की इच्छा नहीं थी।
   (ग) इससे वे लेखक को अपनी नवाबी दिखाना चाहते थे
   (घ) इससे वे अपना मनोरंजन करना चाहते थे।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(4) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा– यह है खानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत!

हम गौर कर रहे थे, खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म, नफ़ीस या एब्स्ट्रैक्ट तरीका ज़रूर कहा जा सकता है, परंतु क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है?

नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लज़ीज़ होता है, लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है।' ज्ञान-चक्षु खुल गए! पहचाना–ये हैं नई कहानी के लेखक!

(CBSE 2015, 16)

1. **नवाब साहब किससे थक गए थे–**
   (क) खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से
   (ख) अधिक पैदल यात्रा करने से
   (ग) अधिक देर खड़े रहने से
   (घ) अधिक बोलने से।
2. **लेखक को तसलीम में सिर क्यों खम कर लेना पड़ा–**
   (क) खानदानी तहज़ीब देखकर
   (ख) खानदानी नफ़ासत देखकर
   (ग) खानदानी नज़ाकत देखकर
   (घ) उपर्युक्त सभी।
3. **लेखक खीरा खाने के कौन-से तरीके पर गौर कर रहे थे–**
   (क) खीरे को सूँघकर स्वाद का आनंद लेना
   (ख) खीरे को केवल देखकर स्वाद लेना
   (ग) खीरे को बिना काटे खाना
   (घ) खीरे को नमक-मिर्च लगाकर खाना।
4. **नवाब साहब ने तृप्ति का प्रदर्शन कैसे किया–**
   (क) पेट पर हाथ फेरकर
   (ख) दाढ़ी पर हाथ फेरकर
   (ग) डकार लेकर
   (घ) जम्हाई लेकर।
5. **नवाब साहब ने खीरे के गुण-अवगुण में कौन-सी बात नहीं कही–**
   (क) खीरा लज़ीज़ होता है
   (ख) खीरा सकील होता है
   (ग) यह मेदे पर बोझ डालता है
   (घ) बहुत मीठा होता है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए*–

1. **'लखनवी अंदाज़' में किस पर व्यंग्य किया गया है–**
   (क) राजनीतिज्ञों पर (ख) धर्म के ठेकेदारों पर
   (ग) सामंती वर्ग पर (घ) धनवानों पर।
2. **महँगा होते हुए भी लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों लिया–**
   (क) वह बहुत अमीर थे
   (ख) एकांत में यात्रा करना चाहते थे
   (ग) उन्हें महँगी यात्रा पसंद थी
   (घ) अपनी शान दिखाना चाहते थे।

3. डिब्बे में बर्थ पर कौन बैठा था–

(क) एक महात्मा

(ख) एक व्यापारी

(ग) नवाबी नस्ल का सफ़ेदपोश

(घ) एक विदेशी।

4. लेखक का कौन-सा अनुमान गलत सिद्ध हुआ–

(क) डिब्बा निर्जन होगा

(ख) डिब्बा भरा होगा

(ग) दौड़कर गाड़ी पकड़ लेगा

(घ) डिब्बा बहुत गंदा होगा।

5. नवाब सेकंड क्लास में यात्रा क्यों करना चाहते थे–

(क) अपनी नवाबी दिखाना चाहते थे

(ख) ताकि उन्हें कोई खीरा खाते हुए न देख सके

(ग) ताकि वे आरामदायक बर्थ पर बैठ सकें

(घ) यह उनका शौक था।

6. नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी में क्या नहीं किया गया–

(क) तौलिए को झाड़कर बिछाया

(ख) खीरों को धोया और पोंछा

(ग) खीरों को छीलकर फाँकों को तौलिये पर सजाया

(घ) उन पर चीनी बुरक दी।

7. नवाब साहब ने लेखक की संगति के लिए उत्साह क्यों नहीं दिखाया–

(क) वह नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें खीरा खाते हुए देखे

(ख) उन्हें लेखक से घृणा थी

(ग) वह किसी का साथ पसंद नहीं करते थे

(घ) वह बहुत एकांत प्रिय व्यक्ति थे।

8. खीरा खाने की इच्छा होते हुए भी लेखक ने इंकार क्यों किया–

(क) उनके लिए खीरा हानिकारक था

(ख) वे नवाब साहब का खीरा नहीं खाना चाहते थे

(ग) वे पहले इंकार कर चुके थे; अतः आत्मसम्मान बनाए रखना था

(घ) खीरा खाना उनकी शान के खिलाफ़ था।

9. नवाब साहब के जबड़ों के स्फुरण से क्या पता चल रहा था–

(क) वे खीरा नहीं खाना चाहते थे

(ख) खीरा देखकर उनके मुँह में पानी आ रहा था

(ग) खीरा बहुत कड़वा था

(घ) उन्हें खीरे से घृणा हो रही थी।

10. नवाब साहब ने खीरा खाने के लिए तैयार किया, लेकिन सूँघकर बाहर फेंक दिया; क्योंकि–

(क) खीरा बहुत कड़वा था

(ख) वे लेखक को अपनी नवाबी शान दिखाना चाहते थे

(ग) वे पागल हो गए थे

(घ) यह एक प्रकार का खेल था।

11. नवाब साहब का लोटा कहाँ रखा था–

(क) सीट के नीचे (ख) सीट के ऊपर

(ग) उनकी गोद में (घ) उनसे थोड़ी दूर।

12. लेखक एकांत क्यों चाहते थे–

(क) वे भजन करना चाहते थे

(ख) नई कहानी के बारे में सोचना चाहते थे

(ग) वे भोजन करना चाहते थे

(घ) वे एकांतप्रिय थे।

13. लेखक ने किसे 'एब्स्ट्रैक्ट' तरीका कहा है–

(क) खीरा सूँघकर पेट भरने को

(ख) खीरा खाकर पेट भरने को

(ग) खीरा सूँघकर बाहर फेंकने को

(घ) खीरे पर नमक-मिर्च बुरकने को।

14. 'लखनवी अंदाज़' में लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है–

(क) पतनशील सामंती वर्ग पर (ख) सभी लेखकों पर

(ग) परजीवियों पर (घ) इनमें से किसी पर नहीं।

15. 'लखनवी अंदाज़' व्यंग्य यह साबित करने के लिए लिखा गया कि–

(क) कथ्य के आधार पर कहानी नहीं लिखी जा सकती है

(ख) बिना कथ्य के कहानी नहीं लिखी जा सकती है

(ग) पात्रों के बिना भी कहानी लिखी जा सकती है

(घ) कहानी निरुद्देश्य भी लिखी जाती है।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (घ) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (ख) **10.** (ख) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (ख)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

अथवा **'नवाब साहब ने खीरे बाहर फेंक दिए।' आपकी दृष्टि में उनका यह व्यवहार कहाँ तक उचित है?** ***(CBSE 2023)***

उत्तर : ऐसा करके नवाब साहब लेखक को अपनी नवाबी शान, लखनवी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत दिखाना चाहते थे। वे दिखाना चाहते थे कि वे आम आदमियों की तरह खीरा खाते नहीं, बल्कि सूँघकर उसकी गंध के स्वाद से ही पेट भर लेते हैं। उनका ऐसा करना उनके बनावटी व ढोंगी स्वभाव को दर्शाता है। यह उचित नहीं है।

प्रश्न 2 : लेखक को नवाब के किन हावभावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर : नवाब साहब ने लेखक को जब डिब्बे में आता देखा तो उनकी आँखों में असंतोष छा गया। उन्होंने लेखक से कोई बातचीत नहीं की; क्योंकि उसके आने से उनके एकांत में बाधा आ गई थी। यहाँ तक कि उनकी तरफ़ देखा भी नहीं और खिड़की से बाहर देखने का नाटक करने लगे। इससे पता चल गया कि नवाब साहब लेखक से बात करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं थे।

प्रश्न 3 : लेखक के लिए कौन-सी स्थिति आशा के अनुकूल नहीं थी और क्यों?

उत्तर : लेखक यह सोचकर सेकंड क्लास में चढ़ा कि यहाँ कोई यात्री नहीं होगा, परंतु उसकी आशा के विपरीत उसमें एक नवाबी स्वभाव वाले सफ़ेदपोश सज्जन सवार थे। लेखक ने सोचा था कि वह अकेले में आराम से नई कहानी के बारे में सोचेगा, परंतु उसकी यह आशा पूरी नहीं हो पाई।

प्रश्न 4 : 'झूठी शान और दिखावे से अपना व्यक्तित्व ही धूमिल पड़ता है।' इस कथन को 'लखनवी अंदाज़' कहानी के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'झूठी शान और दिखावे से अपना व्यक्तित्व ही धूमिल पड़ता है।' यह कथन सत्य है। 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब साहब स्वयं को

असली नवाब होने का ढोंग रचते हैं। अपने हाव-भाव और खीरा खाने संबंधी गतिविधियों से वे लेखक की नज़रों में हास्यास्पद बन जाते हैं और उनका व्यक्तित्व धूमिल पड़ जाता है।

प्रश्न 5 : 'लखनवी अंदाज़' कहानी में निहित संदेश पर प्रकाश डालिए।
***अथवा* 'लखनवी अंदाज़' कहानी में लेखक ने सामंती वर्ग की किस प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है?**
***अथवा* 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा पर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : 'लखनवी अंदाज़' पाठ में लेखक ने नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा की झूठी शान दिखाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन-शैली के आदी हैं। आज के समय में भी नवाब साहब के रूप में ऐसी परजीवी संस्कृति को देखा जा सकता है। नवाब साहब का खीरे को मात्र सूँघकर स्वाद प्राप्त होने और उसे बिना खाए खिड़की से फेंककर पेट भर जाने का दिखावा करना– उनकी बनावटी रईसी को दर्शाता है। उनका सेकंड क्लास में यात्रा करना इस बात को प्रमाणित करता है कि नवाब साहब की नवाबी ठसक तो नहीं रही, परंतु फिर भी वे अपने हाव-भाव और क्रियाकलापों से झूठी शान दिखाते हैं, जिसका कोई महत्त्व नहीं है। इस कहानी में उन ढोंगी लेखकों पर भी व्यंग्य किया गया है, जो स्वयं को नई कहानी का लेखक कहते हैं और विचार, घटना और पात्र के बिना ही कहानी लिखने का दावा करते हैं।

प्रश्न 6 : लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों लिया? *(CBSE 2016,19)*

उत्तर : लेखक नई कहानी के बारे में कुछ सोचना, कल्पना करना चाहते थे, ताकि वे भी नई कहानी लिख सकें। इसके लिए उन्हें एकांत और फुरसत के क्षण चाहिए थे। उन्होंने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया कि डिब्बा खाली होगा, क्योंकि उसका टिकट उस वक्त काफ़ी महँगा होता था।

प्रश्न 7 : नवाब साहब ने खीरा खाने की जो तैयारी की, उसका उल्लेख पाठ के आधार पर कीजिए।
***अथवा* नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए।**

उत्तर : नवाब साहब बर्थ पर बहुत ही सुविधा से पालथी मारकर बैठे थे। उनके सामने दो ताज़े-चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। उन्होंने खीरों के नीचे रखे तौलिये को झाड़कर सामने बिछाया। सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिये से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। फिर खीरों को बहुत एहतियात से छीलकर फाँकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए। इसके पश्चात् नवाब साहब ने बहुत ही करीने से खीरे की फाँकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। इस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था।

प्रश्न 8 : ट्रेन के डिब्बे में नवाब साहब ने लेखक की संगति के लिए उत्साह क्यों नहीं दिखाया?

उत्तर : नवाब साहब ने लेखक की संगति के लिए उत्साह इसलिए नहीं दिखाया; क्योंकि उन्होंने शायद अकेले यात्रा करने के विचार से और किफ़ायत के लिए सेकंड क्लास का टिकट खरीदा होगा। वह नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें सेकंड क्लास में यात्रा करते और खीरा खाते देखे। इसीलिए लेखक के आने से वह असंतुष्ट दिखाई दिए और उन्होंने उनकी संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।

प्रश्न 9 : लेखक ने डिब्बे में पहले से बैठे सज्जन के बारे में क्या कल्पना की?

उत्तर : लेखक ने रेल के डिब्बे में पहले से बैठे सज्जन को देखकर कल्पना की कि वे लखनऊ के नवाब जैसे लगते हैं तथा लेखक के आने से उनके एकांत में बाधा पड़ गई है। वे भी शायद किसी कहानी के लिए नई सूझ की तलाश में होंगे या खीरे जैसी सामान्य चीज़ को खाने के संकोच में पड़ गए होंगे।

प्रश्न 10 : क्या आपको नवाब साहब का व्यवहार सामान्य लगा? क्यों? युक्तियुक्त उत्तर लिखिए। *(CBSE SQP 2023-24)*

उत्तर : हमें नवाब साहब का व्यवहार सामान्य नहीं लगा, क्योंकि लेखक के डिब्बे में आने पर उसकी उपेक्षा करना और खीरों को पहले खाने के लिए तैयार करना, फिर सूँघकर बाहर फेंक देना, ये सभी बातें असामान्य थीं। कोई सामान्य व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता।

प्रश्न 11 : 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब साहब की एक सनक का वर्णन किया गया है। क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का वर्णन कीजिए। *(CBSE SQP 2020)*

उत्तर : 'लखनवी अंदाज़' पाठ में खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। सनक का सकारात्मक रूप भी हो सकता है। सनक को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ किसी काम को करने की लगन या धुन के साथ जोड़ा जा सकता है। इतिहास में ऐसी सनकों के अनगिनत उदाहरण मिलते हैं; जैसे– स्वामी विवेकानंद को ज्ञान प्राप्त करने की सनक, महात्मा बुद्ध को जीवन का सत्य खोजने की सनक, चाणक्य को नंद वंश का समूल विनाश करने की सनक, भगतसिंह को देश पर मर-मिटने की सनक, महात्मा गांधी को देश आज़ाद कराने की सनक आदि। ये ऐसे उदाहरण हैं जो सनक के सकारात्मक पक्ष को पुष्ट करते हैं। सकारात्मक सनक की जीवन में बहुत बड़ी भूमिका होती है। इससे व्यक्ति महानता के शिखर पर पहुँच जाता है।

प्रश्न 12 : लेखक यशपाल नवाब साहब की गतिविधियों को किस प्रकार भाँपते रहे और उनके स्वभाव को समझकर उन्होंने क्या निर्णय लिया?

उत्तर : लेखक यशपाल नवाब साहब की गतिविधियों को बहुत सूक्ष्मता से भाँपते रहे। उनके स्वभाव को समझकर वे इस निर्णय पर पहुँचे कि यदि ये नवाब साहब बिना खीरा खाए तृप्त होकर डकार ले सकते हैं तो नई कहानी के लेखकों द्वारा बिना, विचार, घटना और पात्र के कहानी भी लिखी जा सकती है।

प्रश्न 13 : 'बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है।' यशपाल जी के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? *(CBSE 2015)*

उत्तर : हम लेखक के इस विचार से बिलकुल भी सहमत नहीं हैं कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी लिखी जा सकती है। विचार, घटना तथा पात्र किसी भी कहानी के लिए उसके प्राण तत्त्व होते हैं। लेखक ने यह बात व्यंग्य में कही है। वास्तव में वे यही बताना चाहते हैं कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती। जो इनके बिना कहानी लिखने का दावा करते हैं वे लेखक उसी प्रकार ढोंगी हैं जैसे लखनवी नवाब बिना खीरा खाए पेट भरने का ढोंग करते हैं।

प्रश्न 14 : नवाब साहब द्‌वारा खीरा खाने के तरीके से क्या उदरपूर्ति संभव है? यदि नहीं तो इस तरीके को अपनाने में व्यक्ति की किस प्रवृत्ति का आभास होता है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : नवाब साहब ने अपनी नवाबी शान दिखाने के लिए जिस प्रकार नफ़ासत और नज़ाकत दिखाते हुए आम आदमियों की तरह खीरा खाया नहीं, बल्कि उसकी गंध और स्वाद से ही पेट भर लिया। ऐसे तरीके से किसी प्रकार की तृप्ति नहीं हो सकती। ऐसा नवाब साहब ने अपनी रईसी और नवाबी दिखाने के लिए किया। वे लेखक को दिखाना चाहते थे कि वे सामान्य किस्म के आदमी नहीं, बल्कि औरों से ऊँचे हैं? ऐसी बातों से व्यक्ति की ढोंगी प्रवृत्ति का आभास होता है।

प्रश्न 15 : लेखक के ज्ञान-चक्षु कैसे खुल गए? *(CBSE 2017)*

उत्तर : लेखक सेकंड क्लास के खाली डिब्बे में यात्रा के समय प्राकृतिक दृश्य देखते हुए नई कहानी के बारे में सोचना चाहता था, ताकि वह भी नई कहानी लिख सके। जब उसने अपने सहयात्री नवाब साहब को खीरा खाए बिना डकार लेते देखा तो उसके ज्ञान-चक्षु खुल गए। उसे समझ में आ गया कि नई कहानी के लेखक भी इसी तरह बिना घटना, पात्र और विचार के कहानी लिखकर संतुष्टि का अनुभव कर लेते होंगे। उनकी संतुष्टि भी बिलकुल वैसी ही दिखावटी और खोखली होती होगी, जैसे कि बिना खीरा खाए पेट भरे होने जैसी डकार लेना।

प्रश्न 16 : 'लखनवी अंदाज़' रचना में नवाब साहब की सनक को आप कहाँ तक उचित ठहराएँगे, क्यों? *(CBSE 2020)*

उत्तर : 'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब की सनक को हम बिलकुल भी उचित नहीं मानते। ऐसे ढोंग से किसी को सम्मान नहीं मिलता है। नवाब ने खीरा खरीदा और उसे खाने के लिए तैयार किया, लेकिन लेखक को अपनी नवाबी दिखाने के लिए उसे खाया नहीं, बल्कि सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। यह उसकी सनक थी, जिसे मूर्खता ही कहा जा सकता है। किसी खाद्‌य पदार्थ को तुच्छ समझकर फेंक देना उचित नहीं है।

प्रश्न 17 : 'लखनवी अंदाज' शीर्षक की सार्थकता तर्क सहित सिद्ध कीजिए। *(CBSE SQP 2021)*

उत्तर : 'लखनवी अंदाज' कहानी का शीर्षक पूर्णतः सार्थक है। पूरा कथानक लखनऊ के रईस नवाब के खानदानी नवाबी अंदाज के प्रदर्शन को व्यक्त करता है। आज भी वे लोग नवाबी छिन जाने पर झूठी शान व तौर-तरीकों का ही दिखावा करते हैं।

प्रश्न 18 : 'नवाबी नस्ल' से आप क्या समझते हैं? लखनवी अंदाज पाठ के संदर्भ में लिखिए। *(CBSE 2022 Tarm-2)*

उत्तर : 'नवाबी नस्ल से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों से है, जो नवाबों की परंपराओं का निर्वाह करते हैं और स्वयं को नवाबों जैसा प्रदर्शित करते हैं। 'लखनवी अंदाज' पाठ में नवाब एक ऐसा ही व्यक्ति है। उसने नवाबों जैसी वेशभूषा पहनी है तथा उसके सभी अंदाज नवाबों जैसे हैं, यद्‌यपि वह नवाब नहीं है। ऐसे व्यक्तियों के लिए लेखक ने 'नवाबी नस्ल' शब्द का प्रयोग किया है।

प्रश्न 19 : लेखक को देखकर नवाब साहब असहज क्यों हो गए? 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर लिखिए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : 'लेखक को देखकर नवाब साहब असहज इसलिए हो गए, क्योंकि वे रेल के डिब्बे में अकेले ही सफ़र करना चाहते थे, ताकि स्टेशन से .खरीदे हुए खीरों को खा सकें। वे नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें खीरा खाते हुए देखे।

प्रश्न 20 : नवाब साहब ने खीरा न खाने का जो कारण बताया, क्या वह सही था? 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर कारण सहित लिखिए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : नवाब साहब ने खीरा न खाने का यह कारण बताया कि 'खीरा लज़ीज होता है लेकिन सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है।' वास्तव में खीरा न खाने का यह कारण नहीं था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह खीरा न खरीदते। असली कारण यह था कि वे लेखक के सामने खीरे जैसी छोटी वस्तु नहीं खा सकते थे। इससे उनकी नवाबी शान धूल में मिल जाती।

प्रश्न 21 : 'लेखक की तुलना में नवाब साहब अधिक शिष्ट और सभ्य थे।' 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर सोदाहरण बताइए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : 'लेखक की तुलना में नवाब साहब अधिक शिष्ट और सभ्य थे।' यह बात सत्य है, क्योंकि लेखक ने तो उनके साथ बोलना तक उचित नहीं समझा, जबकि नवाब साहब ने लेखक को दो बार खीरा खाने के लिए आमंत्रित किया।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्‌यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

खाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे। ·····अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

हम कनखियों से नवाब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। 'ओह', नवाब साहब ने हमें संबोधित किया, 'आदाब-अर्ज़, जनाब, खीरे का शौक फ़रमाएँगे? नवाब साहब का सहसा भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया, आप शराफ़त का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया, 'शुक्रिया, किबला शौक फ़रमाएँ।'

1. लेखक की क्या आदत थी–

(क) कुछ खाते-पीते रहने की (ख) अपनी बढ़ाई करने की
(ग) कुछ न कुछ सोचने की (घ) दूसरों की बुराइयाँ ढूँढ़ने की।

2. लेखक नवाब साहब की ओर कैसे देख रहे थे–

(क) सीधी नज़रों से (ख) क्रोधपूर्ण आँखों से
(ग) कनखियों से (घ) बंद आँखों से।

3. लेखक को नवाब साहब की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी–

(क) सहसा भाव परिवर्तन (ख) बिना बात हँसना
(ग) पान चबाना (घ) खीरा खाना।

4. **लेखक क्या अनुमान करने लगा–**
   (क) नवाब साहब सेकंड क्लास डिब्बे में क्यों चढ़े होंगे?
   (ख) नवाब साहब को क्या संकोच और असुविधा हो रही है?
   (ग) नवाब साहब उसके प्रति सम्मान का व्यवहार क्यों नहीं कर रहे हैं?
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **नवाब साहब द्‌वारा खीरा खाने के लिए पूछे जाने पर लेखक ने क्या जवाब दिया–**
   (क) धन्यवाद, आप खीरा खाइए। (ख) हाँ जी, मैं खीरा खाऊँगा।
   (ग) धन्यवाद, मैं खीरा नहीं खाता। (घ) जी आप पहले खाइए।

निर्देश–*निम्नलिखित* प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. **लेखक का कौन-सा अनुमान गलत सिद्‌ध हुआ–**
   (क) डिब्बा निर्जन होगा (ख) डिब्बा भरा होगा
   (ग) दौड़कर गाड़ी पकड़ लेगा (घ) डिब्बा बहुत गंदा होगा।
7. **नवाब साहब ने लेखक की संगति के लिए उत्साह क्यों नहीं दिखाया–**
   (क) वह नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें खीरा खाते हुए देखे
   (ख) उन्हें लेखक से घृणा थी
   (ग) वह किसी का साथ पसंद नहीं करते थे
   (घ) वह बहुत एकांत प्रिय व्यक्ति थे।
8. **लेखक ने किसे 'एब्स्ट्रैक्ट' तरीका कहा है–**
   (क) खीरा सूँघकर पेट भरने को
   (ख) खीरा खाकर पेट भरने को
   (ग) खीरा सूँघकर बाहर फेंकने को
   (घ) खीरे पर नमक-मिर्च बुरकने को।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **'लखनवी अंदाज़' कहानी में निहित संदेश पर प्रकाश डालिए।**
   अथवा **'लखनवी अंदाज़' कहानी में लेखक ने सामंती वर्ग की किस प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है?**
   अथवा **'लखनवी अंदाज़' पाठ में नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा पर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए।**
10. **नवाब साहब ने खीरा खाने की जो तैयारी की, उसका उल्लेख पाठ के आधार पर कीजिए।**
    अथवा **नवाब साहब द्‌वारा खीरा खाने की तैयारी का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए।**
11. **लेखक यशपाल नवाब साहब की गतिविधियों को किस प्रकार भाँपते रहे और उनके स्वभाव को समझकर उन्होंने क्या निर्णय लिया?**
12. **लेखक के ज्ञान-चक्षु कैसे खुल गए?**